# सहयोगी अध्ययन का मर्म और महत्त्व



दामोदर धुवारे
९३७०५५२१३६

**सहयोगी अध्ययन ऐसी शिक्षण-पद्धति है जिसमें विद्यार्थी केवल शिक्षक से ही नहीं, बल्कि अपने साथी के सीखने में भी सहभागी बनता है। कक्षा में कई बार एक विद्यार्थी को कोई संकल्पना सहजता से समझ में आ जाती है, जब कि दूसरा उसी बात को समझने में कठिनाई महसूस करता है। जब पहला विद्यार्थी अपने साथी को सरल भाषा और उदाहरण के माध्यम से समझाता है, तो सीखना अधिक स्वाभाविक हो जाता है।**

इस प्रक्रिया में समझानेवाला विद्यार्थी भी अपनी समझ को और अधिक स्पष्ट करता है। सहयोगी अध्ययन विद्यार्थियों को सक्रिय बनाता है और उनमें संवाद, सहयोग, आत्मविश्वास तथा नेतृत्व जैसे गुण विकसित करता है। यह केवल समूह बनाकर काम करवाना नहीं, बल्कि एक-दूसरे की सीखने की प्रक्रिया में सार्थक भागीदारी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी रटने की प्रवृत्ति के स्थान पर समझ, चिंतन, अनुभव और प्रयोग आधारित शिक्षा पर बल देती है। महाराष्ट्र के मूल्यवर्धन उपक्रम में भी सहयोगी अध्ययन को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भाषा-विषयों में इसका प्रयोग विशेष रूप से प्रभावी हो सकता है, इस महत्त्वपूर्ण विषय पर लेख है।

## सीखना अकेले की यात्रा नहीं

कक्षा में सामान्यतः हम शिक्षक को ज्ञान देने वाला और विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करने वाला मानते हैं। शिक्षक समझाते है, विद्यार्थी सुनते है और फिर परीक्षा में सीखी हुई बात को लिखते है। यह प्रक्रिया शिक्षा का एक आवश्यक हिस्सा है, लेकिन क्या केवल सुनना और याद कर लेना ही सीखना है? जब विद्यार्थी स्वयं सक्रिय होकर सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते है, तो उनकी समझ अधिक गहरी और टिकाऊ होती है। विशेष रूप से तब, जब उसे अपने साथी को कुछ समझाने का अवसर मिलता है। कक्षा में अक्सर ऐसा होता है कि एक विद्यार्थी को कोई बात बहुत अच्छी तरह समझ में आ गई है, जबकि पास बैठा उसका साथी उसी बात को लेकर उलझन में है। शिक्षक द्वारा समझाने के बाद भी यदि उसकी शंका दूर नहीं हुई, तो कई बार वही बात उसका मित्र अपनी सहज भाषा में समझा देता है और विद्यार्थी तुरंत समझ जाता है। यहीं से सहयोगी अध्ययन (Peer Learning) की सार्थकता सामने आती है।

## NEP 2020 : रटने से समझने की ओर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को केवल रटने और परीक्षा-केंद्रित अध्ययन से आगे ले जाकर समझ, चिंतन, अनुभव, प्रयोग और वास्तविक जीवन में ज्ञान के उपयोग की दिशा में ले जाने पर विशेष बल देती है। नीति में Conceptual Understanding को केवल तथ्यों को याद करने की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया गया है। साथ ही आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, चर्चा, खोज और सहयोगात्मक शिक्षण को सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाने की




दृष्टि प्रस्तुत की गई है। रटना विद्यार्थी को यह बता सकता है कि "उत्तर क्या है?", लेकिन समझ उसे यह सोचने की क्षमता देती है कि "उत्तर ऐसा क्यों है?" "यह कैसे हुआ?" और "इसका प्रयोग कहाँ किया जा सकता है?" यही अंतर वास्तविक सीखने और केवल जानकारी याद रखने के बीच है। उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी किसी मुहावरे का अर्थ रट लेता है, तो वह परीक्षा में उसका अर्थ लिख सकता है। लेकिन जब वही विद्यार्थी उस मुहावरे को अपने साथी को अपने शब्दों में समझाता है, उसके प्रयोग का प्रसंग बताता है और स्वयं एक वाक्य बनाता है, तब वह उस ज्ञान को समझ भी रहा है और उसका प्रयोग भी कर रहा है। यहीं सहयोगी अध्ययन NEP 2020 की भावना को कक्षा में व्यवहारिक रूप देता है। जब शिक्षक कहते है, "जिसे समझ आ गया है, वह अपने साथी को समझाए जिसे अभी समझ नहीं आया।" तो कक्षा में सीखने की दिशा बदल जाती है। विद्यार्थी केवल शिक्षक के उत्तर की प्रतीक्षा नहीं करता। वह सोचता है, बोलता है, प्रश्न करता है, अपनी भाषा में समझाता है और दूसरे की शंका दूर करने का प्रयास करता है। समझाने वाले विद्यार्थी के लिए भी यह एक गहरी सीखने की प्रक्रिया है, क्योंकि किसी विषय को स्वयं समझना एक बात है और उसे दूसरे को सरल भाषा में समझा पाना दूसरी। इस प्रकार सहयोगी अध्ययन "उत्तर याद करने वाले विद्यार्थी" से "उत्तर को समझकर समझाने वाले विद्यार्थी" तक की यात्रा है।

## सहयोगी अध्ययन क्या है ?

सहयोगी अध्ययन का अर्थ केवल विद्यार्थियों को समूहों में बैठा देना नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है, विद्यार्थियों को एक-दूसरे की सीख में सक्रिय भागीदार बनाना। इसमें शिक्षक यह पहचानते है कि किस विद्यार्थी को किसी संकल्पना की अच्छी समझ है और किस विद्यार्थी को सहायता की आवश्यकता है। फिर उपयुक्त जोड़ी या समूह बनाकर सीखने का अवसर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक पीछे नहीं हटते। वह

मार्गदर्शक, निरीक्षक और आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप करनेवाले सहायक बनते है। सबसे सुंदर बात यह है कि इस पद्धति में ज्ञान केवल "शिक्षक से विद्यार्थी" तक नहीं जाता, बल्कि "विद्यार्थी से विद्यार्थी" तक भी पहुँचता है।

## भाषा शिक्षण में सहयोगी अध्ययन के सुंदर प्रयोग

भाषा सीखना केवल व्याकरण के नियम याद करना नहीं है। भाषा को बोलना, सुनना, पढ़ना, समझना और उचित संदर्भ में प्रयोग करना भी सीखना है। इसलिए हिंदी, मराठी और अंग्रेजी जैसे विषयों में सहयोगी अध्ययन विशेष रूप से उपयोगी है।

**हिंदी : " मुझे आता है, मैं तुम्हें समझाता हूँ "**

कक्षा में "नाक में दम करना" मुहावरा आया। एक विद्यार्थी इसका अर्थ अच्छी तरह जानता है, लेकिन उसके साथी को मालूम नहीं। वह अपने मित्र से कहता है, "इसका मतलब है बहुत परेशान करना। जैसे कोई छोटा बच्चा बार-बार शरारत करके अपनी बहन को परेशान करे, तो कह सकते हैं कि उसने उसकी नाक में दम कर दिया।" बस! एक विद्यार्थी ने दूसरे विद्यार्थी को अर्थ भी समझा दिया और उसका प्रयोग भी बता दिया। यहाँ सीखना किसी पर थोपा नहीं गया। बच्चे ने बच्चे को उसकी अपनी सहज भाषा में समझाया।

**मराठी : "मला माहीत आहे !"**

मराठी के पाठ में "कौतुक" शब्द आया। एक विद्यार्थी उसका अर्थ जानता है, दूसरा नहीं। वह अपने साथी से कहता है, "कौतुक म्हणजे एखाद्याच्या चांगल्या कामाची प्रशंसा करणे." फिर वह उदाहरण देता है, "तू छान चित्र काढलंस म्हणून शिक्षकांनी तुझं कौतुक केलं." दूसरे विद्यार्थी के लिए कठिन शब्द अब केवल पुस्तक का शब्द नहीं रहा। वह उसके अर्थ और प्रयोग दोनों को समझ गया। यही सहयोगी अध्ययन है—ज्ञान का सहज रूप से एक विद्यार्थी से दूसरे विद्यार्थी तक पहुँचना।

**English : "I know this word!"**

अंग्रेजी की कक्षा में "Brave" शब्द आया। एक विद्यार्थी उसका अर्थ जानता है और दूसरा नहीं। वह अपने साथी से कहता है, "Brave means courageous. A brave person is not afraid to face a difficult situation." फिर वह उदाहरण देता है, "A brave soldier." अब दूसरा विद्यार्थी केवल Brave = Courageous याद नहीं करता, बल्कि शब्द का अर्थ और उसका प्रयोग दोनों समझता है। अगली बार संभव है कि वही विद्यार्थी किसी दूसरे कठिन शब्द को अपने साथी को समझाए। यानी सीखने की भूमिका बदलती रहती है।

## समझाने वाला भी सीखता है

सहयोगी अध्ययन की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यही है कि इसमें केवल जिसे समझाया जा रहा है वही नहीं सीखता, बल्कि समझाने वाला विद्यार्थी भी अधिक गहराई से सीखता है। जब बच्चे से कहा जाता है कि "अपने साथी को समझाओ", तो वह स्वयं सोचता है, मैं इसे कैसे समझाऊँ? कौन-सा उदाहरण दूँ? कौन-से सरल शब्द इस्तेमाल करूँ? इस प्रक्रिया में उसका ज्ञान व्यवस्थित होता है और उसकी अवधारणा अधिक स्पष्ट होती है। इसीलिए कक्षा में कभी-कभी केवल यह पूछने के बजाय की "किसे समझ आया?", यह पूछना अधिक उपयोगी हो सकता है, "किसे समझ आया है और वह अपने साथी को समझा सकता है?" यह छोटा-सा बदलाव विद्यार्थी की भूमिका बदल देता है।

## मूल्यवर्धन और सहयोगी अध्ययन

महाराष्ट्र के मूल्यवर्धन उपक्रम में सहयोगी अध्ययन को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सहयोगी गतिविधियों,

चर्चा और विद्यार्थी सहभागिता के माध्यम से बच्चों में केवल शैक्षणिक समझ ही नहीं, बल्कि सहयोग, संवाद, आत्मविश्वास, नेतृत्व और सामाजिक कौशल विकसित करने पर भी जोर दिया गया है। इस दृष्टि से सहयोगी अध्ययन कोई अतिरिक्त या अलग गतिविधि नहीं है। इसे हम अपने नियमित शिक्षण में सहज रूप से शामिल कर सकते हैं। किसी पाठ की एक कठिन बात, किसी शब्द का अर्थ, व्याकरण का नियम, गणित का सवाल या किसी विषय की अवधारणा जिसे आता है, वह साथी को समझाए और शिक्षक पूरी प्रक्रिया का मार्गदर्शन करे।

## सहयोगी अध्ययन और शिक्षक की भूमिका

कभी-कभी यह भ्रम हो सकता है कि यदि विद्यार्थी एक-दूसरे को पढ़ाएँगे तो शिक्षक की भूमिका कम हो जाएगी। वास्तव में ऐसा नहीं है। सहयोगी अध्ययन में शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक को यह देखना होता है कि,

- सभी विद्यार्थी सही तरीके से समझा रहे है या नहीं;
- सभी विद्यार्थियों को अवसर मिल रहा है या नहीं;
- कोई गलत अवधारणा आगे तो नहीं बढ़ रही;
- संकोची विद्यार्थी भी सहभागिता कर रहा है या नहीं;
- अंत में सभी विद्यार्थियों की समझ सही दिशा में पहुँची है या नहीं।

अर्थात शिक्षक "सब कुछ स्वयं बताने वाले" से "सबको सीखने का अवसर देने वाले" मार्गदर्शक की भूमिका में आते है।

## सहयोगी अध्ययन : पाठ से आगे की शिक्षा

सहयोगी अध्ययन का लाभ केवल पाठ समझने तक सीमित नहीं है। जब विद्यार्थी अपने साथी को सुनता है, अपनी बात रखता है, प्रश्न करता है और समझाता है, तब उसमें जीवन के लिए आवश्यक अनेक क्षमताएँ विकसित होती हैं। संवाद, सहयोग, नेतृत्व, आत्मविश्वास, धैर्य, दूसरों को सुनना, अपनी बात स्पष्ट रूप से रखना और समस्या का समाधान करना ये सभी गुण कक्षा की ऐसी गतिविधियों के माध्यम से स्वाभाविक रूप से विकसित हो सकते हैं। इसलिए सहयोगी अध्ययन केवल एक शिक्षण तकनीक नहीं, बल्कि सहजीवन और सह-अस्तित्व की शिक्षा भी है।

## निष्कर्ष : विद्यार्थी को केवल सीखने वाला क्यों बनाएँ ?

शिक्षा का उद्देश्य केवल यह नहीं कि विद्यार्थी पाठ याद करके परीक्षा में सही उत्तर लिख दे। वास्तविक शिक्षा तब है जब वह सीखी हुई बात को समझ सके, अपने शब्दों में व्यक्त कर सके, उसका उपयोग कर सके और आवश्यकता पड़ने पर किसी दूसरे को भी समझा सके। सहयोगी अध्ययन इस दिशा में एक सरल, प्रभावी और मानवीय पद्धति है। जब विद्यार्थी अपने साथी से कहता है, "तुम्हें समझ नहीं आया? रुको, मैं समझाता हूँ।" तो उस क्षण कक्षा में केवल एक विद्यार्थी दूसरे को नहीं पढ़ा रहा होता। दोनों विद्यार्थी सीख रहे होते हैं। एक अपनी शंका दूर कर रहा होता है और दूसरा अपनी समझ को और पक्का कर रहा होता है। यही सहयोगी अध्ययन की सबसे बड़ी शक्ति है। "जब विद्यार्थी सीखने के साथ सिखाने लगता है, तब शिक्षा केवल ज्ञान का संचार नहीं रहती; वह ज्ञान का सह-निर्माण बन जाती है।" शायद यही वह कक्षा है जिसकी कल्पना नई शिक्षा नीति करती है, जहाँ शिक्षक मार्गदर्शक हो, विद्यार्थी सक्रिय हो और सीखना सबकी साझा जिम्मेदारी हो। ■

**(लेखक नगर परिषद, गोंदिया द्वारा संचालित मनोहर म्युनिसीपल हायर सेकंडरी स्कूल, में सहायक अध्यापक पद पर कार्यरत है।)**